भजन

तर्ज–आ लौट के आ जा मेरे मीत

पिया तोड़ दो बंधन आज, कि अब रूह चलना चाहती है
हर दिल की यहीं है आवाज,कि अब रूह चलना चाहती है

1–आसों उम्मीद सब तुझपे है राखी,मुझ में नहीं कुछ भी मेरा
कब से रखा दिल तेरे निशाने पिया,इश्क तीर कहां तेरा
अब देर न कर तीरंदाज....

2–आशिक पिया वहीं जलते जो गुपचुप,होठों पे रखते हैं ताले
आई लहर जो मस्ती भरी,दिल संभले न लाख संभाले
नहीं बस में रहे जज्बात...

3–वार दिया कैसे खुद को रूहों पर,हमने न है भेद पाया
बीच फना के इल्मों इश्क का,सुख हमने तुमसे है पाया
तेरे सबसे जुदा हैं अन्दाज...